

— अस्ति 1) durch Werfen, durch Schiessen Jmd bestiegen: बहुभिन्नैक-
मत्यस्यैकेन च बहुज्ञानम् । विनिर्योक्त्याम्यहं वाणान्वाजिगजमर्मम् ॥ R.
2, 23, 37. — 2) अत्यस्त P. 2, 1, 24. über Etwas hinweg gebracht, Etwas
hinter sich habend: तुहिनमत्यस्तः, तुहिनात्यस्तः Sch. — Vgl. अत्यास.

— व्यति part. व्यत्यस्त umgestellt, in eine umgekehrte Lage gebracht:
व्यत्यस्तपाणिना कार्यमुपसंयच्छन् गुरोः । सव्येन सव्यः स्पष्टव्यो दक्षिणेन
च दक्षिणः (पादः) ॥ M. 2, 72. व्यत्योसम् adv. abwechselnd Çat. Br. 4, 5, 9,
11, 5, 1, 2, 16. KĀTJ. Çr. 16, 6, 5. 17, 7, 10. ÂÇV. Çr. 9, 8, 10, 4.

— अग्निं darüberwerfen: तयोश्चक्षुर्दध्यस्यति KĀTJ. Çr. 8, 3, 23. — Vgl.
अध्यास.

— अनु part. अन्वस्त durchschossen, durchflochten: (मेखला) मुञ्जवल्शे-
नान्वस्ता भवति Çat. Br. 3, 2, 1, 13.

— अप 1) wegschleudern, wegwerfen, abwerfen: अग्निमातीरपास्य RV.
3, 24, 1. वर्किरेव तत्स्तृणान्वाप्यत् Çat. Br. 1, 2, 3, 26. 1, 2, 13. 3, 2, 1, 31.
3, 2, 8. KĀTJ. Çr. 6, 6, 10. चीराण्यपास्याज्जनकस्य कन्या R. 2, 38, 6. भूष-
णमपास्य NALOD. 3, 8. बाले ऽपास्तपिपीलिके KATHĀS. 13, 61. अपास्त fort-
gestossen AMAR. 2. wegtreiben, verscheuchen: अपास्य हि रसान्मोमांस्त-
प्त्वा च जगद्भुमिः । परेताचरितां भीमां रविराविशते दिशम् ॥ DAÇ. 1, 14.
Vgl. अपासन. — 2) zur Seite werfen, bei Seite lassen, in Stich lassen,
aufgeben, keine Rücksicht auf Jmd oder Etwas nehmen; stets gerund.:
अन्नपानमपास्य MBh. 1, 7942. अपास्य चास्य यत्तारम् 2, 36. अपास्य फलकु-
दालं कुरुष्व वचनं मम R. 2, 32, 30. दृष्ट्वा मधून्यपास्यैव (der folg. acc. da-
von abhängig) सर्वानस्मानभक्तयत् 5, 63, 6. सारं ततो ग्राह्यमपास्य फल्गु
PANĀT. Pr. 10. Hit. 70, 10. PRAB. 17, 14. 83, 10. Çiç. 1, 44. यदि समरम-
पास्य (vom Kampfe abgesehen, ausgenommen im Kampfe) नास्ति मृत्यो-
र्भयम् Hit. III, 139. — 3) verwerfen, zurückweisen: इत्यादीनां काव्यल-
क्षणमपास्तम् SĀH. D. 5, 8. इति मैथिलममपास्तम् TITHJĀDITATVA im
ÇKDR. u. अपास्त.

— अस्मि 1) hinwerfen, zuwerfen, abschiessen: यं प्रतिवेशं शकलं विन्दे-
तमभ्यस्याभिनुकुपात् Çat. Br. 12, 4, 3, 1. नेपारिष्ठात्समिधमभ्यस्य कुरति
5, 2, 10. AIT. Br. 3, 22. अभ्यस्यते (gen. sg.) वाणान् MBh. 1, 5479. — 2)
seine Thätigkeit, seine Aufmerksamkeit auf ein best. Ziel richten, ob-
liegen, betreiben, besorgen, verrichten, studiren, lesen: वेदमेव सदाभ्य-
स्यत् M. 2, 166. MBh. 1, 6759. अभ्यस्यतीव व्रतमासिधारम् RAGH. 13, 67.
अभ्यस्यति तदाघातम् (गज्ञाः) KUMĀRAS. 2, 50. मृगकुलं रोमन्मभ्यस्यत् ÇĀK.
39. व्यापारमभ्यस्यता (instr.) MRĒKH. 52, 2. कुर्कर्मज्ञामिवाभ्यस्यन्नाविष्य-
तीमयोगतिम् KATHĀS. 24, 94. VID. 21. वेदमेवाभ्यसेन्नित्यम् M. 4, 147. KULL.
zu 6, 29. चान्द्रायणं वा त्रीन्मासान्भ्यसेत् M. 11, 106. अभ्यसन्वेदम् JĀGŪ. 3,
204. तद्वत्स — काले काले सदाभ्यसन् MBh. 3, 1450. सक्षुक्त्वस्त्वभ्यस्य
(hersagend) वर्किरेतत्तत्कम् M. 2, 79. 4, 123. वेदमभ्यस्य 6, 95. 11, 251.
254. 257. 258. 262. med.: ब्रह्मैवाभ्यसते पुनः M. 4, 149. pass.: कञ्चिदभ्यस्यते
सम्यगृहे ते — धनुर्वेदस्य सूत्रं वै यत्सूत्रं च नागरम् MBh. 2, 256. नाभ्य-
स्ता च कषायवत्त्रचना MRĒKH. 114, 5. नपनपोरभ्यस्तमामीलनम् AMAR.
92. विद्या RAGH. 1, 8. BHARTṢ. 3, 47. PANĀT. 244, 1. Vgl. अभ्यसन, अभ्य-
स्त, अभ्यास.

— अस्व hinwerfen Çat. Br. 6, 3, 2, 6.

— अस्वय auf Etwas hinwerfen: दक्षिणापरमष्टमदेशमभ्यवात्येद्वर्हिः
KAUÇ. 87.

— आ med. einfassen, hineinschöpfen: तमास्यधूमर्मिम्या मुहस्ताः
RV. 10, 30, 2. धृतवतीमर्धयो मुचमास्यस्व Çat. Br. 1, 5, 2, 1.

— उद् 1) in die Höhe werfen, in die Höhe heben Çat. Br. 7, 1, 1, 5.
13, 8, 2, 4. 9. तदुदस्तमलातम् MBh. 3, 430. पुच्छमुदस्यति P. 3, 1, 20. Sch.
पूर्वार्धेन पुष्पशय्यामुदस्य ÇĀK. 34, 1. उदस्त hinaufgeworfen H. 1482. Sch.
— 2) hinauswerfen Çat. Br. 2, 6, 2, 16. KĀTJ. Çr. 5, 10, 18.

— अनूद् hinter Jmd in die Höhe werfen Çat. Br. 5, 2, 1, 16. 17.

— अप्युद् umherstellen, hier und da anbringen: क्षिप्रवत्साराणूपाः
सर्वे रत्नाकरास्तथा । अत्याः सर्वे अप्युदस्ता युधिष्ठिरनिवेशने ॥ MBh. 2, 1805.

— व्युद् 1) herauserschleudern, umherstreuen, ausbreiten: व्युदस्यत्य-
संव्याताः शर्कराः KAUÇ. 30. मुञ्जवल्शरभीता बह्वस्तत्र पादपाः । चीरा-
णीव व्युदस्तानि रेनुस्तत्र म्हावने ॥ MBh. 3, 434. — 2) fahren lassen,
aufgeben: रागद्वेषौ व्युदस्य BHAG. 18, 51. कामक्रोधौ व्युदस्य MBh. 2, 564.
सीमन्तिनीभुजलतागहनं व्युदस्य ÇĀNTIÇ. 2, 17.

— उप unter Etwas werfen, zu Etwas hinwerfen: अद्यस्ते अस्मिन्ना म-
न्यमुपास्यामसि यो गुरुः AV. 6, 42, 2. फालीकरणात्कपालेनाधो ऽधः कृत्वा-
जिनमुपास्यति Çat. Br. 1, 9, 2, 33. 3, 8, 1, 14. 2, 15. 4, 2, 5, 6. तस्याधस्ताद्व-
र्किरूपास्यति ĀPAST. bei SĀJ. zu AIT. Br. 2, 11. चमसेषूपास्यति KĀTJ. Çr.
10, 5, 11. 4, 1, 16. 6, 5, 15. पादयो रूक्मा उपास्यति 19, 4, 10.

— व्युप dass. mit Hinzutritt des Begriffes der Vertheilung: अथ सुव-
र्णरजतौ रूक्मौ व्युपास्यति Çat. Br. 12, 8, 3, 11.

— नि 1) niederwerfen, niederlegen, niedersetzen: यं बल्वैजं न्यस्येव
AV. 14, 2, 22. अथ पुनर्लीष्टं न्यस्यति Çat. Br. 3, 2, 2, 21. 3, 3, 7. KĀTJ. Çr.
24, 3, 27. न्यसेत्पादम् M. 6, 46. न्यस्यतो कलसः R. 1, 2, 7. भर्तुर्न्यस्य शनैः
शिरः SĀV. 5, 9. न्यस्तशस्त्रः M. 3, 192. DRAUP. 7, 8. न्यस्तचिक्षा RAGH. 2, 7.
तामस्तिकन्यस्तवलिप्रदीपाम् RAGH. 2, 24. übertr.: अपि प्राणान्यसिष्यति
(das Leben aufgeben) R. 2, 46, 20. यथा — न जीवितं न्यस्य यमस्यैव व्रजेत् 38, 17.
न्यस्तेदं gestorben 78, 9. अर्थात्तरं न्यस्यति er bringt einen neuen Um-
stand zur Sprache MALLIN. zu Çiç. 1, 17. mit einem loc. auf Etwas nie-
dersetzen, niederlegen, aufsetzen, auflegen: कन्दः पुरुषमेनोनिर्णीदं शरीरे
न्यसेत् KĀTJ. ANUKR. 4, 13 in VS. p. LVI. अयोग्ये न मद्विधो न्यस्यति भार-
मग्र्यम् BHARTṢ. 1, 22. शिखरिषु पदं न्यस्य MEGH. 13. तान्यस्मिन्मन्यन्दने निप्रं
न्यस्यताम् (आयुधानि) R. 3, 28, 27. उपकारं भुवि न्यस्तम् 4, 41, 29. 2, 104,
7, 8. न्यस्तः — सर्पमुखे करः Hit. II, 137. मया — न्यस्तं मुखं तन्मुखे AMAR.
33. प्रमदालोचनन्यस्तं मलीमसमिवाञ्जनम् Hit. II, 148. ÇĀK. 57. अंशन्यस्त
MEGH. 60. पुरा न्यस्तं ललामकम् AK. 2, 6, 2, 37. H. 632. चित्रन्यस्त auf
ein Gemälde aufgetragen, gemahlt KUMĀRAS. 2, 24 (vgl. अरू caus. 4). प-
थि न्यस् auf die Strasse werfen, ablegen, aufgeben: न्यसेत्पथि (कर्म ein
Gewerbe) JĀGŪ. 3, 35. शिरस्याज्ञां न्यस् einen Befehl mit der gebührenden
Ehrerbietung aufnehmen AMAR. 82. एवं शापं मयि न्यस्य (einen Fluch auf
Jmd schleudern) R. 2, 64, 55. अतर्न्यस्त hineingelegt AK. 2, 2, 3. — hin-
einsetzen, in Etwas setzen; mit dem loc.: राजा कृत्वा पुरे स्थानं वा-
क्शणान्यस्य तत्र JĀGŪ. 2, 185. त्रैपदीमाश्रमे न्यस्य DRAUP. 1, 5. पित्रा
क्षेपः — राख्यधृष्टा वने न्यस्तः R. 4, 3, 9. न्यस्तां सागरतेये वा पाताल-
पि मैथिलीम् 16, 41. — न्यस्त hingestreckt, hingeworfen: न्यस्तां भूमौ च वै-
देहीम् R. 3, 38, 2. स भूमौ न्यस्तसर्वाङ्गः (mit gesenkten Gliedern) — पपात
4, 16, 2. सुन्यस्त eine schöne Stellung im Liegen einnehmend, schön ge-
legen: श्यामावदाताः सुन्यस्ताः (वराङ्गनाः) R. 5, 14, 23. रत्नवसना लङ्का